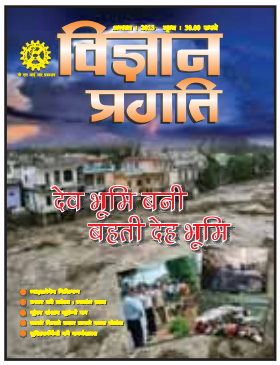


## साहित्यिक पत्रिकाओं के मध्य 'विज्ञान प्रगति'

निःसंदेह पुरातन एवं अत्याधुनिक आविष्कारों की जानकारी देने वाली 'विज्ञान प्रगति' एक सर्वश्रेष्ठ पत्रिका है। मेरे अध्ययन कक्ष में साहित्यिक पत्रिकाओं के मध्य 'विज्ञान प्रगति' मेरे घर के सभी लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है। नित्य नूतन अलंकारिक शीर्षकों के प्रति सभी सदस्य आकर्षित होते हैं।

विज्ञान प्रगति के जुलाई, 2013 के अंक में प्रकाशित आमुख कथा 'वायुयानों की बर्फ आसमान से जमीन पर' किसी साहित्यकार की लेखनी से लिखे शीर्षक से कम नहीं है। विज्ञान के प्रति आकर्षण साहित्यिक अभिरूचि को जागृत करने वाला है। साहित्यिक अभिरुचि रखने वाला पाठक शीर्षक के प्रति आकर्षित होता है। शीर्षक देखकर पढ़ने की इच्छा प्रबल हो उठती है। विज्ञान प्रगति पत्रिका के शीर्षक पाठक को अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता रखते हैं। यह इस पत्रिका की सबसे बड़ी विशेषता है। पत्रिका के भीतर विज्ञान जैसे कठिन विषय को आसान बनाने की क्षमता विद्यमान है।

विज्ञान और साहित्य एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों ही कल्पना पर आधारित हैं। दोनों का जन्म स्थान एक ही है। साहित्यकार कल्पनाओं का वैज्ञानिक होता है। साहित्य के बिना विज्ञान अधूरा है, और विज्ञान के बिना साहित्य। विज्ञान में मानव हित की बात निहित होती है और साहित्य में स + हित है अर्थात् मानव हित।

विज्ञान प्रगति मेरे लिए प्रेरणा स्रोत है। जब मैं कल्पनाओं के भँवर में वृत्ताकार होकर घूमने लगता हूँ तो 'विज्ञान प्रगति' मेरे हाथ में आ जाती है। उस समय मन और मेरी दृष्टि को प्राकृतिक छाया की शीतलता प्राप्त होती है।

**श्री दया नाथ आनंद, प्रवक्ता, साहित्यिक संस्थान देवापगा, शास्त्री नगर, कचहरी रोड गाधिपुरी, जनपद-गाजीपुर-233 001**

## सर्वश्रेष्ठ पत्रिका

मैं बी. एससी. (भौतिक विज्ञान) द्वितीय वर्ष का छात्र हूँ तथा विगत कई वर्षों से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। हर बार की तरह विज्ञान प्रगति का अगस्त 2013 का अंक भी रोचक, रोमाचंक और ज्ञानवर्द्धक लगा। वैसे मुझे विज्ञान प्रगति का प्रत्येक अंक रोचक लगता है। इसके अन्दर छपे लेख काफी अनुभवी लोगों द्वारा लिखे हुए होते हैं जो युवाओं में वैज्ञानिक बनने की सोच पैदा करते हैं। विज्ञान प्रगति एक ऐसी पत्रिका है जो खासकर विद्यार्थियों के जीवन के हर अँधियारे मोड़ पर तेज रोशनी फैलाने का काम करती है। श्री विमलेश चन्द्र द्वारा प्रस्तुत विशेष लेख 'सुंदर संसार सुरंगों का' बहुत अच्छा लगा। इसके अतिरिक्त महत्वपूर्ण जानकारी के अंतर्गत 'उधार की कोख : ज्वलंत प्रश्न' व 'माइक्रोवेव विकिरण : फलों द्वारा बचाव संभव' अत्यन्त ज्ञानमयी और प्रशंसनीय लगे। इसके अतिरिक्त सवाल-जवाब, विज्ञान क्विज व चित्र कथा काफी रोचक लगते हैं।

**श्री राजेश कुमार, सुपुत्र श्री रामदेव दास, ग्राम-फुलवड़िया-03 कुम्हार टोली, पोस्ट-बरौनी, थाना-फुलवड़िया, जिला-बेगूसराय, 851 112 (बिहार) [मो. : 08603883608; ई-मेल : rk2989717@gmail.com]**

## आकर्षित करती पत्रिका

मैं एम. एससी. (जन्तु विज्ञान) अन्तिम वर्ष का छात्र हूँ और जनवरी 2011 से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। इस पत्रिका में ज्ञान का प्रयोगात्मक रूप से स्पष्टीकरण दिया जाता है, तथा विषय की संक्षेप रूप में व्याख्या की जाती है। मुझे 'सवाल जब जब, जवाब तब तब' बहुत अच्छा लगता है, और साथ ही वर्ग पहेली तथा प्रतियोगिताओं के लिये प्रश्नों का संग्रह भी काफी पसन्द है। मेरी दृष्टि से अगर किसी व्यक्ति ने विज्ञान प्रगति एक बार पढ़ ली या एक नजर देख ली तो उनका मन न चाहने पर भी विज्ञान प्रगति पढ़ने का अवश्य करेगा। विज्ञान प्रगति रंगीन पृष्ठों के साथ बहुत ही आकर्षित पत्रिका है।

**श्री पंकज सैंजवाल, सुपुत्र श्री प्रेमलाल सैंजवाल, मुख्य सहायक ख.शि. अधि. घाट चमोली (उत्तराखण्ड) [मो. : 09634439266; ई-मेल pankajsenjwal@gmail.com]**

## ऐतिहासिक पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति का एक नियमित पाठक हूँ और विज्ञान प्रगति को एक ऐतिहासिक पत्रिका मानता हूँ। मेरे हाथों में जब इसका अगस्त 2013 अंक आया तो उसमें मैं अपना प्रतियोगिता का सामाचार देखकर फुले न समाया, (बाल विज्ञान कांग्रेस) जिसका की मैं प्रतिभागी था। उस बाल विज्ञान कांग्रेस के बारे में इस अंक में विस्तार से जानकारी दी गई है। आवश्यक तथ्य यह है कि यह अंक मेरे पास 100 वां अंक था।

**श्री नचिकेता वत्स, बाल वैज्ञानिक सह बाल श्री, लारी (अखल) (बिहार) 804 421**

## ज्ञान का अमृत : विज्ञान प्रगति

मैं राजकीय पॉलिटेक्नीक, गोरखपुर में द्वितीय वर्ष का छात्र हूँ तथा विज्ञान प्रगति का पिछले तीन वर्षों से नियमित पाठक हूँ। मुझे विज्ञान प्रगति का अगस्त 2013 का अंक प्राप्त हुआ। 'देव भूमि बनी बहती देह भूमि' आमुख कथा को पढ़कर आखों में आंसू आ गये। उत्तराखण्ड के केदारनाथ इलाके में इतनी दर्दनाक, वीभत्स, अकल्पनीय सजा मिली जिसका वर्णन करना मुश्किल है। दरअसल सच तो यही है कि ईश्वर ने हम सभी को प्रकृति के खिलाफ चलने की सजा दी है। इस अंक में विकिरण के दुष्प्रभाव तथा उससे बचाव के बारे में जानने को मिला। बुद्धिकर्मियों की कार्यशाला को पढ़कर पता चला कि चिन्तन-मनन करने के लिए सुव्यवस्थित तरीके क्या होने चाहिए। एक कहानी 'बुधिया की सैर' को पढ़कर जहां मनोरंजन हुआ उसके साथ ही भी साथ मुझे परमाणु बिजली घर से जुड़ी तमाम जानकारियां मिलीं। सो सो और सौ सौ को पढ़कर मुझे सौ (100) से जुड़े महत्वपूर्ण गणितीय तथ्यों को समझने का मौका मिला। विज्ञान प्रश्न तथा विज्ञान क्विज को पढ़कर वास्तव में मुझे यह लगा कि विज्ञान प्रगति रोचक तथा सराहनीय पत्रिका ही नहीं बल्कि यह तो बहुमूल्य ज्ञान की अमृत बन चुकी है। इतनी सारी जानकारियां प्रस्तुत करने के लिए मैं इस पत्रिका की पूरी टीम को धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा ही नहीं बल्कि विश्वास करता हूँ कि विज्ञान प्रगति दिन दूनी, रात चौगुनी प्रगति करती रहेगी।

**श्री सुजीत शर्मा, सुपुत्र श्री ध्रुव देव शर्मा, ग्राम + पोस्ट-सिकटा (छोटा) जनपद-कुशीनगर 274 303 (उ.प्र.) [मो. : 09451260040; ई-मेल : sujit1996gkp@rediffmail.com]**

## शिक्षाप्रद अंक

मैं एम.एससी बायोटेक्नोलॉजी की छात्रा हूँ। विज्ञान प्रगति के अगस्त 2013 के अंक में महत्वपूर्ण जानकारी स्तंभ के अंतर्गत 'उधार का कोख : ज्वलंत प्रश्न' काफी शिक्षाप्रद लगा। विज्ञान प्रगति के सम्बन्ध में मैं केवल यही कहूँगी कि जिस प्रकार हजारों गरजती हुई नदियां समुद्र में विलीन होती हैं और समुद्र शान्त होता है उसी प्रकार विज्ञान प्रगति के लेख वैज्ञानिक रूपी खजाना समाहित किये रहते हैं लेकिन फिर भी साधारण दिखते हैं।

विज्ञान प्रगति के इस अंक में प्रकाशित चित्र कथा व कहानी ने भी अपनी ओर आकर्षित किया है। विज्ञान प्रगति के लेखों को पढ़ने से हमें यही प्रतीत होता है कि :

क्यों डरें कि जिन्दगी में क्या होगा?
हर वक्त क्यों सोचें कि बुरा होगा?
बढ़ते रहेंगे अपनी मजिलों की ओर हम
कुछ नहीं मिला तो क्या.....
तजुर्बा तो नया होगा।

यदि जलाशय के सूखने की कोई वैज्ञानिकता होती है तो सागर में बाढ़ न आने की भी कोई वैज्ञानिकता होती है। गुलाब की कली और सरसों की फली की वैज्ञानिकता जानने के लिए विज्ञान प्रगति रूपी वृक्ष के नीचे बैठना पड़ेगा।

**सुश्री प्रस्तुति मिश्रा, छात्रा एम.एससी. बायोटेक्नोलॉजी, डाल्फिान पोस्टग्रेजुएट कालेज ऑफ बायोमेडिकल साइंस, देहरादून (उत्तराखंड) [मो. : 09727394169; 09415126876]**

## अनमोल पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ तथा विज्ञान प्रगति के प्रत्येक अंक का गहनता से अध्ययन करता हूँ और पाता हूँ कि इसके प्रत्येक अंक में विभिन्न प्रकार की महत्वपूर्ण जानकारियाँ मौजूद होती हैं। इसी प्रकार जब मैं अगस्त 2013 माह के अंक

का अध्ययन कर रहा था तो मुझे 'सुन्दर संसार सुरंगों का' के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। और इसी अंक में 'चलते फिरते काम करने वाला रोबोट' को बनाने की विधि का वर्णन किया गया जो कि बहुत पसंद आया। इस पत्रिका की सहायता से बहुत कुछ सीखने को मिलता है जिसके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि यह पत्रिका अनमोल है।

**श्री प्रशान्त कुमार सिंह, सुपुत्र श्री किशोर, सी ब्लाक, गाँधी नगर, तेलीबाग लखनऊ (उ.प्र.)**
**[मो. : 09807753414**
**ई-मेल : prashantratansingh005@gmail.com]**

## अभीष्ट पत्रिका

वैसे तो मुझे विज्ञान प्रगति का प्रत्येक अंक रोचक व आकर्षक लगता है लेकिन मुझे अगस्त 2013 का अंक काफी महत्वपूर्ण लगा। इस अंक की आमुख कथा से कुछ महिने पहले आए उत्तराखण्ड प्रलय के बारे में विशेष जानकारी मिली। उत्तराखण्ड प्रलय बहुत दुःख भरी घटना थी। इसके अलावा चिन्तन मनन में 'बुद्धिकर्मियों की कार्यशाला' पढ़कर भी एक नई ऊर्जा मिली। विज्ञान प्रगति में कुछ लेख इतने सुव्यवस्थित व सुसंगठित होते हैं जिन्हें पढ़ने के बाद हम एक नई ऊर्जा, जोश, उमंग व उत्साह से भर जाते हैं। चिन्तन मनन में लिखा ये वाक्य 'यदि मेज की विपरीत दिशा में एक शान्त सी तस्वीर लगी हो जिससे आँखों को आराम मिले तो यह बुद्धिमतापूर्ण कदम होगा' काफी अच्छा लगा, क्योंकि हम दैनिक जीवन में अनेक कार्य करते हैं। लेकिन उस कार्य से हमें कितना लाभ और कितनी हानि है, ये हम नहीं जानते। विज्ञान प्रगति नए-नए अच्छे कार्य करने की प्रेरणा देती है। विज्ञान प्रगति एक अद्वितीय, अनमोल, ज्ञानवर्धक, अग्रणी पत्रिका है जो आज देश के लोगों के समक्ष आसानी से पहुँच रही है। इसके लिए मैं विज्ञान प्रगति के सम्पादक और इससे जुड़े सभी लोगों को तहे दिल से धन्यवाद देता हूँ।

**श्री प्रिन्स दूबे, सुपुत्र श्री अनिल दूबे, वार्ड न. 7, घुघली, महराजगंज (उत्तर प्रदेश) [मो. : 09450432850; 09415470683**
**ई-मेल : dubeyprince22@yahoo.com]**

## पसंदीदा पत्रिका

विज्ञान प्रगति मेरे लिए एक अति महत्वपूर्ण पत्रिका है क्योंकि विज्ञान प्रगति के कारण ही मैंने अपनी पढ़ाई के लिए विज्ञान वर्ग को चुना। पहले मैं केवल जीव-विज्ञान में ही रूचि लेता था क्योंकि मुझे पेड़-पौधों व जन्तुओं के बारे में पढ़ने में अच्छा लगता था और भौतिक व रसायन विज्ञान केवल टाइम-पास विषय लगते थे। परिणाम यह हुआ कि मैं इन विषयों में फेल हो गया। फिर एक दिन हमारे भौतिक विज्ञान के अध्यापक ने कक्षा में विज्ञान प्रगति के बारे में बताया तो मैंने सोचा क्यों न एक बार इसे भी पढ़कर देखा जाये। जब मैंने इसका पहला अंक खरीदा तो इसका मूल्य 20 रूपये था लेकिन मैंने इसे खरीदा और पढ़ा तो मैं इसके लेखों में ऐसे खो गया जैसे कि पानी में रंग, फिर तो मानो कि मेरी जिंदगी ही बदल गई।

फिर मैंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। विज्ञान प्रगति मेरी इतनी पसंदीदा पत्रिका है कि मैं अपने दोस्तों के जन्मदिन पर इसी पत्रिका को भेट करता हूँ। अतः विज्ञान प्रगति की पूरी टीम को दिल से धन्यवाद।

**श्री रविन्द्र नाथ गोस्वामी, ग्राम-रोपा सेरा, पी.ओ-बेतालघाट, जिला-नैनीताल 263 134**

## ज्ञान का भण्डार

मैं आई.एससी (गणित) की छात्रा हूँ तथा पिछले एक वर्ष से विज्ञान प्रगति की पाठिका हूँ। मैं विज्ञान प्रगति के प्रत्येक अंक का बेसब्री से इन्तजार करती हूँ। मुझे इस पत्रिका में सवाल-जवाब, विशेष लेख, विज्ञान क्विज काफी बेहद अच्छे लगते हैं।

इस पत्रिका में मुझे नई-नई वैज्ञानिक खोजों के बारे में रोचक, अतुलनीय जानकारियां मिलती हैं। वर्ग पहेली भी काफी सराहनीय लगती है। विज्ञान समाचार तथा आमुख कथा काफी लोकप्रिय लगते हैं।

**सुश्री नेहा कुमारी गुप्ता, सुपुत्री श्री रामबाबू गुप्ता, गुप्ता साईकिल स्टोर, ग्राम + पो. चैनपुर, जिला - सीवान 841 203 (बिहार)**
**[ई-मेल : nkgupta1998@rediffmail.com]**

## रोचक पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति की नियमित पाठिका हूँ। जुलाई 2013 के अंक में क्षय रोग पर विस्तृत लेख 'क्षय का भय आज भी' रोग मिटाने में आत्मविश्वास पैदा करेगा। चिन्तन मनन के अंतर्गत 'समय का सदुपयोग' समय के मूल्य का वास्तविक प्रमाण है। देवकी नंदन जी 'सवाल जब जब, जवाब तब-तब' के माध्यम से विज्ञान प्रगति में चार चाँद लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ते। विज्ञान प्रगति के सभी अंक रोचक लगते हैं।

**सुश्री रेणु कुमारी, सुपुत्री श्री स्व. रामेश्वर प्र. सिंह, ग्राम+पो.-बैजनाथपुर, जिला-सहरसा, भाया-सहरसा कचहरी 852 201 (बिहार)**

## वैज्ञानिकता का खजाना

जहाँ पहाड़, पेड़-पौधे, पानी और पक्षियों का जिक्र एवं फिक्र हो उसे ही विज्ञान प्रगति कहते हैं। यदि हवा से उसकी नमी, पहाड़ों से उनकी उचाईयां पक्षियों से उनकी उड़ान, आसमान तथा सागर से उनकी व्यापकता निकाल दी जाय तो कुछ बचेगा ही नहीं, उसी प्रकार यदि विज्ञान प्रगति से प्रकृति के लेख और उसकी वैज्ञानिकता हटा दिया जाय तो उपरोक्त की स्थिति आ सकती है। इसलिए कहा जा सकता है कि विज्ञान प्रगति वैज्ञानिकता का खजाना है। लेखों की वैज्ञानिकता ही इसकी आत्मा होती है। कभी जीवाश्म विशेषांक तो कभी पर्यावरण विशेषांक कभी फलों से लदे हुए वृक्षों के अंकों के विशेषांक के रूप में विज्ञान प्रगति ने अपने पाठकों को नये आयाम दिए हैं। सागर के किनारे तो दिखायी नहीं देते हैं लेकिन विज्ञान प्रगति के लेखों की वैज्ञानिकता दिखायी पड़ती है। दृश्य ही सत्य होता है। विज्ञान प्रगति के अगस्त 2013 के अंक में 'उधार की कोख : ज्वलंत प्रश्न' बहुत पसंद आया।

प्रकृति की एक खूबसुरत धरोहर है विज्ञान प्रगति।
इंसानियत के पनपने का एक सुन्दर सरोबार है विज्ञान प्रगति।।
पक्षियों की चहचहाहट, बदलते मौसम का एक उपहार है विज्ञान प्रगति।
खड़े वृक्ष, लहलाती हरियाली की अमानत है विज्ञान प्रगति।।

**सुश्री रंजना रानी मिश्रा, प्रधानाचार्या, प्राथमिक विद्यालय, महरावन्धा, जिला मउ (उ.प्र.)**
**[मो. : 09455274474; 09727394169]**

## प्राकृतिक आपदा से सबक

उत्तराखण्ड में पिछले 16 जून 2013 को आई प्राकृतिक आपदा ने सब कुछ बर्बाद कर दिया। इस आपदा से मानव को सबक लेने की आवश्यकता है। प्रकृति से छेड़छाड़ का ही यह दुष्परिणाम है कि आज मानव को इतनी बड़ी त्रासदी झेलनी पड़ी। विज्ञान प्रगति पत्रिका के अगस्त 2013 अंक में कवर पर उत्तराखण्ड की त्रासदी को दर्शाया गया है। इस त्रासदी को दर्शाना विज्ञान प्रगति पत्रिका परिवार की तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित करना है। इस अंक की सबसे बड़ी विशेषता रही है कि अपनी बात में अब तक भारत में घटी त्रासदियों को दर्शाया गया है जो सभी पाठकों के लिए ज्ञानवर्द्धक है। इस अंक में स्वास्थ्य पर आधारित 'उधार की कोखः ज्वलंत प्रश्न' पढ़कर बहुत अच्छा लगा। वैसे विज्ञान प्रगति सर्वोपरी है क्योंकि यह हर क्षेत्र से सम्बंधित सूचनाएं एकत्र कर सस्ती दर पर उपलब्ध कराती है। इसके लिए मैं सम्पादक मण्डल को धन्यवाद देता हूँ।

**डॉ. सत्य प्रकाश, सुपुत्र डॉ. राम विष्णु प्रसाद, ग्राम-बरवाँ, पो. मीरगंज, जिला-गोपालगंज, 841 438 (बिहार)**
**[मो. : 09471040259; 09661609850]**

## अनोखी पत्रिका

मुझे विज्ञान प्रगति का अगस्त 2013 का अंक पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इस अंक में प्रकाशित लेख 'माइक्रोवेव विकिरण : फलों द्वारा बचाव संभव' के माध्यम से विकिरण दुष्प्रभाव के बारे में अति महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई। विज्ञान प्रगति के तीन स्तम्भ विज्ञान समाचार, विज्ञान प्रश्न तथा सवाल जवाब पत्रिका की सुंदरता में चार-चांद लगा देते हैं।

**श्री विमल वर्मा, मोहल्ला दुर्गाप्रसाद, निकट कोल्ड स्टोर, बीसलपुर, जिला-पीलीभीत 262 201 (उ.प्र.)**

## ज्ञानवर्धक अंक

मैं विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ और मुझे इसके प्रत्येक अंक का बेसब्री से इंतजार रहता है क्योंकि इस पत्रिका ने मुझे विज्ञान के प्रति बहुत अधिक प्रेरित किया है। जुलाई 2013 के अंक में स्वास्थ्य संबंधी जानकारी, कितना प्रदूषित है हमारा भूमिगत जल एवं सवाल-जवाब बेहद रोचक और ज्ञानवर्द्धक लगे। मैं विज्ञान प्रगति के माध्यम से पहली बार फल अनन्नास के विषय में जानकारी प्राप्त कर रहा हूँ। इस अंक की आमुख कथा 'वायुयानों की बर्फ आसमान से जमीन पर' बहुत ज्ञानवर्धक लगी। विशेष लेख सरल हुआ सफल, 'रेडियेशन बेल्ट स्टार्म प्रोब्स मिशन' भी रोचक लगे।

**श्री नमूना पडित, सुपुत्र श्री रामा पडित, थाना नवतन, जिला-सिवान (बिहार)**